OM 17 EDITED_Page 1 and 2 11-11-2014 15:47 Page 3

... तुम वही हो जाओ, जो तुम होने को आये हो ...

जीवन जैसे-जैसे थोड़ा झुकेगा, जैसे-जैसे अहंकार थोड़ा-थोड़ा गलेगा, वैसे-वैसे अंधेरी रात में भी उसकी बिजलियां कौंधनी शुरु हो जाती हैं। आप झुके नहीं कि उसका आना शुरु हुआ नहीं! आप ही बाधा हो, आप ही दीवार बनकर खड़े हो, आप गिर जाओ, उसका खुला आकाश सदा से ही मुक्त है।

परमात्मा दूर नहीं है, आप अकड़े खड़े हो, आपकी अकड़ ही दूरी है। आपका झुक जाना ही निकटता हो जाएगी।

- ब्र. कु. गंगाधर

वैसे शास्त्रों में भी कहते हैं परमात्मा दूर से दूर और पास से पास है। दूर, जब आप अकड़ जाते हो। दूर, जब आप कहते हो मैं ही हूँ, तू नहीं है। पास, जब आप कहते हो तू ही है, मैं नहीं हूँ। जब आप आँख खोलते हो। जब आप अपने पात्र को...अपने हृदय के पात्र को...उसके सामने फैला देते हो, तब आप भर जाते हो, हज़ार-हज़ार खज़ानों से।

प्रभु तो रोज़ ही आ सकता है। आता ही है। उसके अतिरिक्त और कौन आयेगा? जब आप नहीं पहचानते, तब भी वही आता है। जब आप पहचान लेते हो, धन्य भाग्य! जब आप नहीं पहचानते, तब भी उसके अतिरिक्त न कभी कोई आया है और ना कभी आयेगा। वही आता है। क्योंकि सभी की शक्लें उन्होंने ही बनाई हुई है। सभी उनकी ही रचना है। सभी को उसने ही बनाया है। सभी को अपने नयन कमलों से सशक्त कर भरपूर किया है। तो अगर कभी एक बार ऐसी प्रतीती हो कि आगमन हुआ है, तो उस पतीती को गहराना, सम्भालना, उस प्रतीती को साधना, सुरीत बनाना। फिर और धीरे-धीरे कोशिश करो और उस प्राप्त प्रेम को पहचानो, बांटो। उसी भाव से सबको देखने का यत्न करो।

पुरानी कहावत है, अतिथि देवता है। अर्थ है कि जो भी आये उसमें परमात्मा को पहचानने की चेष्टा जारी रखनी चाहिए। चाहे हज़ार बाधायें आये, चाहे कठिनाइयाँ आयें, चाहे कितनी भी गालियाँ खानी पड़े, चाहे कितनी भी मुश्किलातें आये, तब भी आप समझना कि वो वही है। दोस्त में तो दिखाई पड़ेगा ही लेकिन शत्रु में भी वही दिखाई पड़े, अपनों में तो दिखाई पड़ेगा ही लेकिन परायों में भी दिखाई पड़े। रात के अंधेरे में ही नहीं, और जितने पदचाप आपको उसके सुनाई पड़ने लगे उतनी ही पंखुरियाँ तो आपकी खुलने लगेंगी।

चमन में फूल खिलते तो सभी ने देख लिये, सिसकते गूँचे की हालत किसी को क्या मालूम। रोती हुई कलि की हालत, और कलि तभी फूल हो सकती है जब अनंत के पदचाप उसे सुनाई पड़ने लगे। आप अपने से फूल न हो सकोगे। सुबह जब सूरज उगता है ओर सूरज की किरणें नाच उठती हैं आकर कलि की निकटता में, सामीप्य में...कली के ऊपर...जब सूरज की किरणों के हल्के-हल्के पद कलि पर पड़ते हैं, तो कलि खिलती है, फूल बनती है। जब तक तुम्हारे ऊपर परमात्मा के पदचाप न पड़ने लगें, उसके स्वर आकर आघात न करने लगें, तब तक आप कलि की तरह ही रहोगे।

कलि की पीड़ा यही है कि खिल नहीं पाई। जो हो सकता था, वह नहीं हो पाया। नियति पूरी न हो, यही संताप है, यह दु:ख है। हर आदमी की पीड़ा यही है कि वह जो होने आया है, नहीं हो पा रहा है। लाख उपाय कर रहा है- गलत, सही; दौड़-धूप कर रहा है, लेकिन पाता है, समय बीतता जाता है और जो होने को मैं आया हूँ वह नहीं हो पा रहा हूँ। जब तक तुम वही न हो जाओ जो तुम होने को आये हो तब तक संतोष असम्भव है। स्वयं होकर ही मिलता है परितोष।

तो सुनो, प्रभु के पदचाप जहां से भी सुनाई पड़ जायें। और धीरे-धीरे सब तरफ से सुनाई पड़ने लगेंगे। जिस दिन हर घड़ी उसी का अनुभव होने लगे कि वही द्वार पर खड़ा है, वही सामने है, उस क्षण फूल खुल जाता है। वह जो सुगंध आप अपने भीतर लिये हो, अभिव्यक्त हो जाती है। वही अनुग्रह है, उत्सव है, अहोभाव है। परमात्मा को मालूम है आपकी हालत के बारे में। जब आप होते हो सब तरफ, कहीं सुराग नहीं मिलता; टटोलते हो सब तरफ और चिराग नहीं मिलता; और ज़िन्दगी प्रतिपल बीतती चली जाती है, हाथ से प्रत्येक क्षण खिसकते चले जाते हैं, जीवन की धार बही चली -- शेष पेज 6 पर

जो एक्यूरेट है, वही निमित्त है, वही सैम्पल

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

ओम् शान्ति, कितना मीठा लगता है, कितना प्यारा लगता है। मेरा बाबा प्यारा बाबा या मीठा परिवार, प्यारा परिवार कहें...फिर मैं कहाँ जाऊँ क्या करूँ? तो पहले मेरा बाबा, फिर मीठा बाबा फिर प्यारा बाबा और मीठा परिवार, प्यारा परिवार...एक-एक इतना मीठा लगता है, तब तो मैं खैंच करके आ जाती हूँ। राइट टाइम पर राइट टचिंग आवे, यह है इंस्ट्रुमेंट का काम। कोई भी इंस्ट्रुमेंट होगा बनाने वाला तो बना देगा, उसको यूज़ करना, चलाने वाला कोई साधारण नहीं चला सकता, यह इंस्ट्रुमेंट ऐसा है। मैं इंस्ट्रुमेंट हूँ, ऐसा लायक सबके आगे हाज़िर होने के लिए किसने बनाया? इंस्ट्रुमेंट क्या बोले! मुझे चलाने वाला वो है ना। कैसे चल रही हूँ, बनाने वाला वो है ना। ऐसी फीलिंग जो है बड़ा न्यारा और प्यारा बना देती है। जैसे बाबा ने कहा एक-एक शब्द दिल को लगता है। इंस्ट्रुमेंट माना न्यारा और फिर बड़ा प्यारा लगता है।

इंस्ट्रुमेंट माना सिम्पल और सैम्पल। पुराने ज़माने की बात है, बड़े-बड़े बिज़नेसमैन सैम्पल दिखा करके बिज़नेस करते थे। एक सैम्पल दिखायेंगे और कहेंगे इतने दाम में मिलेगी, तो उनका वो बिज़नेस बहुत अच्छा चलता है। तो वह बिज़नेसमैन इतने अच्छे होते थे, कहीं और जगह न जा करके वहाँ ही जाते थे। जैसे हमारे ब्रह्माबाबा का कलकत्ते की मार्केट में बहुत अच्छा दुकान था, ऐसा अच्छा बिज़नेस था, कोई भी ग्राहक बाबा को छोड़ दूसरी जगह नहीं जायेगा। तो जिस इंस्ट्रुमेंट में सच्चाई और प्रेम है तो वह बेफिक्र हो शान्ति और रूहानियत से, ठाठ से अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इंस्ट्रुमेंट माना सच्चा सेवाधारी। जो एकदम त्यागी, तपस्वी। कोई भी बात के त्याग की कमी है तो तपस्या नहीं होगी। याद, योग, तपस्या में अन्तर है। बाबा को याद करें तो अच्छा है। बाबा रोज़ मुरली में कहता है याद करो, याद करो। इसके लिए देहधारियों को याद नहीं करो, देह के सम्बन्ध से न्यारे बनो, मतलब याद के लिए पुरुषार्थ है। फिर योग इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी हो जिसमें ऐसी ज्ञान की धारणा हो, क्योंकि ज्ञान सिर्फ सुनने और सुनाने के लिए नहीं है। सुनते धारणा हो, धारणा होने से ज्ञान सुनाने वाले से योग लग जाता है। याद करना नहीं पड़ता है, योग लग जाता है। योग बल मिलता है फिर नैचुरल तपस्वी मूर्त बन जाते हैं, जैसे बाबा मम्मा। देखना हो तो बाबा मम्मा को देखो, हमारे सभी पूर्वजों को देखेंगे तो सब त्यागी तपस्वी हैं। आज भी इन्हों के फोटो देखने और याद आने से एक रौनक आ जाती है। जैसे देखो, परदादी नाम लेते ही सारे इस्टर्न ज़ोन की सेवा याद आ जाती है। परदादी ने विश्व का भी चक्र लगाया है, जब वे विदेश में आई थीं तब परदादी के सामने यह गीत बजा था - रचना जिसकी इतनी सुन्दर, वो रचता कैसा होगा...। तो हमारे जो पूर्वज हैं उनकी दुआ मेरे ऊपर बहुत है। हमारी दीदी खुद बोलती नहीं थी मेरे को कहती थी तुम यह बोलो, तुम यह बोलो...हर बार मुझे आगे बढ़ाती रही। जो बाबा ने बताया है वह स्पष्ट करो। दीदी ने ही सिखाया है - याद में भोजन करो, ट्रैफिक कन्ट्रोल ठीक से करो। उसका प्रमाण है कि अभी हम कभी अलबेले नहीं हो सकते हैं। अगर अभी भी कोई अलबेले हैं तो वे राइट इंस्ट्रुमेंट नहीं हैं। दीदी को टाइम का कदर बहुत था। एक्यूरेट क्लास में आना, सुबह और शाम के योग में भी एक्यूरेट। निमित्त बनना हो तो एक्यूरेट की मिसाल बनो। तो अच्छा सैम्पल बनने से अच्छा बिज़नेस हो जाता है, माना औरों में उमंग-उत्साह पैदा होता है। परिवर्तन हो तो ऐसा एक्यूरेट, कोई कमी न दिखाई पड़े, वो तभी होगा जब हमको किसी की कमी दिखाई नहीं पड़ेगी। मुख्य कमी यह है, जो मुझे किसी की कमी दिखाई पड़ी। बहुत-बहुत ज़रूरी है कमी नज़र न आवे। कमी देखी तो यह मेरा डिफेक्ट हो जायेगा, फलाना ऐसा करता है, देखना...क्या बोला? किसने बोला? अपना मुँह देख, मुखड़ा देख ले प्राणी दर्पण में...इसलिए कभी इधर-उधर न देखो, मेरा बाबा इतना रहमदिल है, बाबा में इतना दया भाव और क्षमा भाव है, कैसी भी आत्मा होगी तो भी कहता था अच्छा बच्चे...ठीक हो जायेगा। बाबा कभी नहीं कहेगा यह क्यों किया? पास्ट इज़ पास्ट। बाबा से इतनी अच्छी-अच्छी बातें देखने सीखने को मिली हैं। मम्मा को भी मैंने देखा है, मम्मा ऐसे करेक्शन नहीं देती थी, बाबा दे देता था, मम्मा नहीं देती थी। यह सब अनुभव इसलिए सुनाया जाता है, अनुभव करो ना। तो अच्छे अनुभव से जो हमारे में कमी है, खलास हो जाती है।

जिनका संकल्प ''हम पास होंगे'' वही बाबा के पास होंगे

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

परमात्मा से आशीर्वाद कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

आज दिन तक भी भागवत में हमारे जीवन का गायन हैं, वो गा रहे हैं और हम चल रहे हैं। शान्ति भी दो प्रकार की होती है। एक है सोच की शान्ति, दूसरी है ज्ञान के स्थिति की। अंदर से सभी जानते हैं कि मेरी स्थिति कैसी है! एक सेकेण्ड जो बीता वह बीता। बाबा से वायदा करो कि हम आप जैसा बनेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, जैसा चलायेंगे वह करेंगे। पेपर आना माना स्वयं का पक्का होना है। दिल्ली वाले राज्य तैयार करने वाले हैं, हमारी ड्यूटी है सतयुग में सबको सेट करने की। हम सबको ऐसा योग्य बनायेंगे जो सतयुगी देवतायें तैयार हों। हमारी जीवन ऐसी है जो दु:ख-अशान्ति फील नहीं होती। रोज़ अमृतवेले बाबा की शाबाश लो कि बाबा मैं कल भी ठीक रही और आज भी ठीक रहूँगी।

प्रश्न - दादी जी, हमारे प्रति अपने दिल की आश बताइये?

उत्तर - कोई भी प्रॉब्लम नहीं बनना, प्रॉब्लम मिटाने वाले बनो। टीचर्स निमित्त हैं सबको उड़ाने वाली, यही हमारी ड्यूटी है। आज से बाबा को यही रिज़ल्ट देंगे कि बाबा दिल्ली पास है। हमारे कहने का मान तो रखेंगे ना। बाबा मदद करता है, नाज़ुक को भी ठीक कर देता है। दिल से बाबा कहो, वह हमारे लिये बंधा हुआ है। बाबा को एक मास का रिकॉर्ड दिखाना है कि आप समान रहूँगी और विजयी बनूँगी। बाबा कहे दिल्ली वालों ने जो वायदा किया वो निभाया है! दिल्ली करेगा तो औरों में भी उमंग आयेगा। आप सभी हमारे दिल की साथी हो। बाबा अपने मुख से कहे कि दिल्ली पास। हमें औरों को भी आगे बढ़ाना है। सारे विश्व का कल्याण करना है। बातें तो आयेंगी हम लक्ष्य रखें कि हम पास होंगे। संकल्प में भी पास। आगे हमारी कोई कमज़ोरी की रिपोर्ट ना हो।

प्रश्न - दादी जी, आप टीचर्स को किस स्वरूप में देखना चाहती हैं?

उत्तर - सन्तुष्टमणि के रूप में। आप सब तो जानती हो कि सन्तुष्टता क्या होती है? आज से संकल्प करो मैं सन्तुष्टमणि हूँ, बाबा के गले का हार हूँ।

प्रश्न:- दादी, बाबा कहता है, पारस को छूने से भी लोहा पारस हो जाता है, अगर हमारी स्थिति पारस जैसी बनी है तो हमारे आजू-बाजू रहने वालों में कुछ तो चेंज दिखाई देना चाहिए?

उत्तर:- उसमें फिर इतनी पॉवर चाहिए जो उस तक पहुँचे। अभी तक इतनी पॉवर नहीं है जो उस तक पहुँचे। अपने तक तो ठीक है, खुद बना है लेकिन इतनी पॉवर नहीं है जो दूसरे तक भी पहुँचे। उसके लिए स्पेशल अटेन्शन देना पड़ेगा। अगर उससे आपका कनेक्शन होगा और वह भी समझता है कि यह पॉवरफुल है, इसका मेरे को मिल सकता है, तभी तो होगा ना। ऐसे ही आप उसको दे रहे हो, उसको भावना ही नहीं है, तो वह कैसे चेंज होगा।

प्रश्न:- जैसे कहावत है दिया के तले अंधेरा, ऐसे कभी-कभी महसूस होता है, हम संकल्प करते हैं लेकिन वह अंधेरा दूर नहीं हो पाता है।

उत्तर:- उसके लिए बहुत पॉवरफुल योग चाहिए, क्योंकि उसके संस्कार बहुत कड़े हैं, उसके लिए फिर कॉमन योग नहीं चलेगा। ऑफीशियल पॉवरफुल योग, चलते-फिरते उसको देवें, यह हमारे अटेन्शन में रहे, मुझे यह करना ही है तो फिर हो जायेगा।